

प्रश्न :

एशियाई देशों में स्वाधीनता-आंदोलनों के विकास की रूपरेखा दीजिये।

01 Dec, 2017 सामान्य अध्ययन पेपर 1 इतिहास

उत्तर :

उत्तर की रूपरेखा-

- एशिया के विभिन्न देशों यथा- अफगानिस्तान, ईरान, चीन, तुर्की और भारत में स्वाधीनता आंदोलनों के प्रयासों को बताएँ।

प्रथम विश्वयुद्ध की समाप्ति के बाद भारत सहित अन्य एशियाई उपनिवेशों को झटका लगा, कति प्रथम विश्वयुद्ध ने साम्राज्यवादी ताकतों को अवश्य कमजोर कर दिया। इसके साथ ही 1917 की क्रांति के बाद रूसी दृष्टिकोण में बदलाव भी उपनिवेशों के अनुकूल हुआ।

रूसी क्रांति से पूर्व ईरान रूसी और ब्रिटिश प्रभाव कक्षेत्रों में बँटा था, कति 1917 के बाद रूस ने अपने प्रभाव कक्षेत्र का नयितरण छोड़ दिया। इसके बाद अंग्रेजों ने पूरे कक्षेत्र को अपने अधीन लेने की कोशिश की, जिसके विरोध में वहाँ व्यापक विरोध हुआ। फलस्वरूप फौजों को ईरान छोड़ना पड़ा और 1925 में रजा खान ईरान का सम्राट बना।

अफगानिस्तान में अंग्रेजों का बोलबाला था। 1919 में अफगानिस्तान के राजा की हत्या हो गई और उसका बेटा अमानुल्लाह शासक बना, जिसने स्वतंत्रता की घोषणा कर दी। लेकिन भारत की ब्रिटिश सरकार ने अफगानिस्तान के विरुद्ध युद्ध छेड़ दिया, परंतु कुछ समय बाद ही उसे अफगानिस्तान की स्वतंत्रता को मान्यता देनी पड़ी।

तुर्की में मतिर राष्ट्रों की संधिपर हस्ताक्षर हेतु मुस्तफा कमल पाशा के नेतृत्व में एक राष्ट्रीय सरकार की स्थापना हुई, जिससे कति तुर्की के कुछ हिस्से को इटली और यूनान को सौंपा जा सके। यह सरकार एक संधि के द्वारा सोवियत संघ से राजनीतिक समर्थन और हथियार प्राप्त करने में सफल रही। यूनान ने संधि के बावजूद तुर्की पर हमला कर दिया। इस हमले को तुर्की की जनता ने नाकाम कर दिया। फलतः मतिरराष्ट्र पूर्व की संधि को रद्द करने पर मजबूर हुए और मतिरराष्ट्रों ने अपने सैनिकों को वापस बुला लिया जिससे तुर्की की पूर्ण स्वतंत्रता का मार्ग प्रशस्त हुआ।

इंडोनेशिया में डच शासन को उखाड़ फेंकने के लिये 1927 में नेशनल पार्टी का गठन किया गया और कोरिया में भी जापान के विरुद्ध संघर्ष मजबूत हुए।

चीन में स्वाधीनता आंदोलन के मुख्य स्तंभ डॉ. सन यात-सेन थे। 1911 की क्रांति में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने के साथ-साथ उन्होंने 1917 में कैंटन में एक सरकार की स्थापना की। इनके द्वारा शक्ति पार्टी कोमनितांग ने चीन राष्ट्रीय आंदोलन को मजबूत बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। 1921 में चीन में कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना हुई। दोनों पार्टियों ने मलिकर काम करने की प्रतिबद्धता दिखाई। कति, 1925 में सन यात-सेन की मृत्यु के बाद दोनों पार्टियों के मध्य गृह-युद्ध आरंभ हो गया।

कति, जापानी आक्रमण के कारण दोनों पार्टियों पुनः संगठित हुईं और अंततः कम्युनिस्ट पार्टी अपनी श्रेष्ठता स्थापित करने में सफल रही। जापान के आत्मसमर्पण और गृह-युद्ध से निपटने के बाद 1 अक्टूबर, 1949 को 'नए साम्यवादी सलाहकार सम्मलेन' के नरिण्यों के माध्यम से लोक गणराज्य की घोषणा कर दी गई और मार्च 1950 तक चीन के लगभग सभी भागों में साम्यवादी सरकार की स्थापना हो गई।

भारत में स्वाधीनता आंदोलन काफी लंबे समय तक चला। विभिन्न प्रशासनिक-सामाजिक सुधारों के नाम पर अंग्रेजों ने भारत में औपनिवेशिक नयितरण को मजबूत किया और भारत के संसाधनों का अधिकतम दोहन किया। भारत को स्वाधीन करने के लिये सन् 1885 में गठित कॉंग्रेस के सहयोग से विभिन्न नेताओं ने कई आन्दोलन चाले। महात्मा गांधी के नेतृत्व में चलाए गए आंदोलनों में असहयोग, सविनय अवज्ञा और स्वतः स्फूर्त भारत छोड़ो आंदोलन के माध्यम से अंग्रेज भारत छोड़ने को मजबूर हुए और 15 अगस्त, 1947 को भारत स्वतंत्र हुआ।

window.print();

PDF Refernece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/mains-practice-question/question-458/pnt>

